Daily Current Affairs
26 June 2025

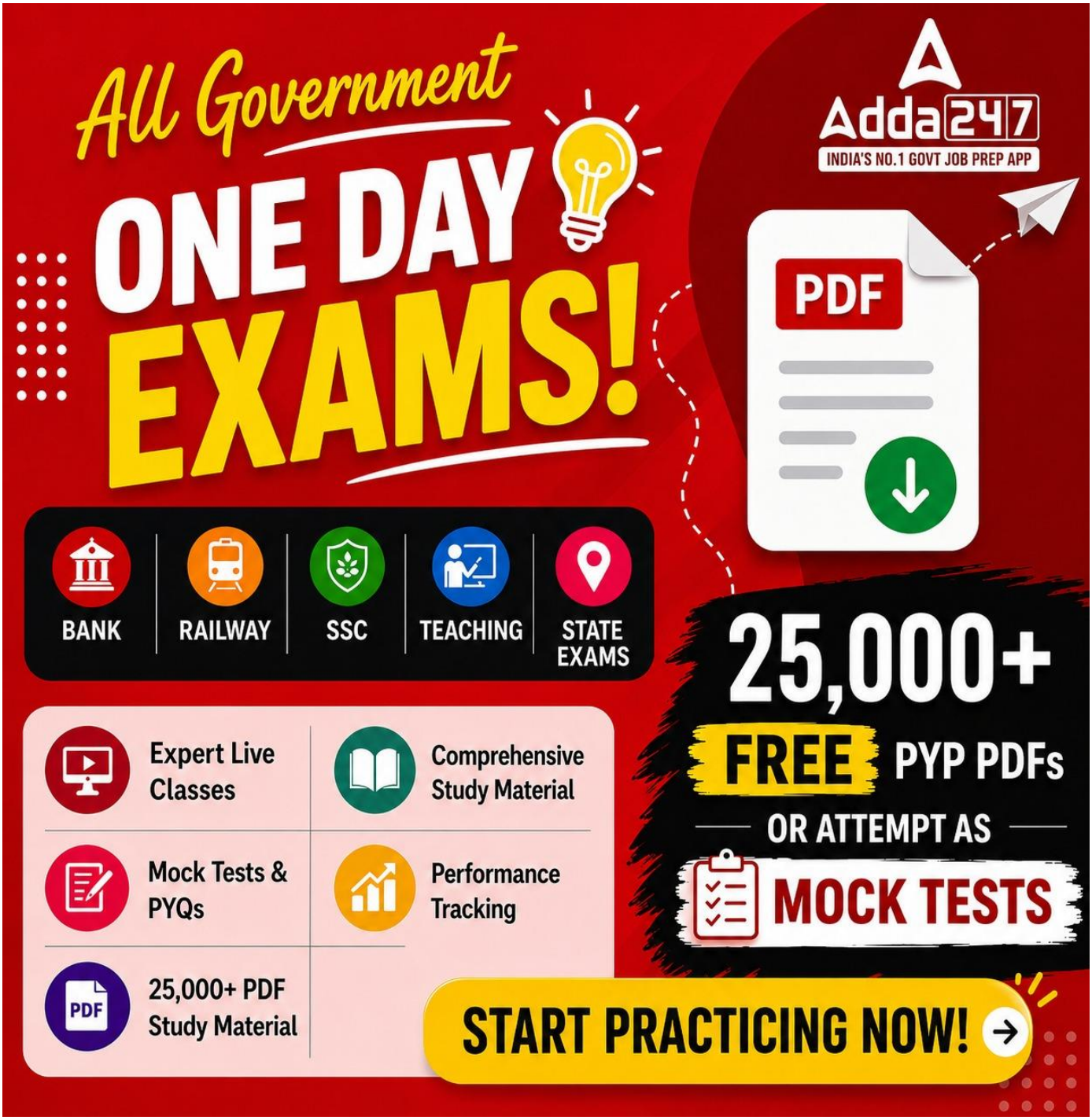

Daily Current Affairs Quiz 26 June 2026

Q1. कोलकाता में स्थापित की जाने वाली डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की प्रतिमा की प्रस्तावित ऊंचाई कितनी है?
(a) 100 फुट
(b) 150 फुट
(c) 125 फुट
(d) 108 फुट
Ans.(c)
Sol. सही उत्तर (C) 125 फुट है
व्याख्या:
• पश्चिम बंगाल की राज्य सरकार ने एक अत्यंत महत्वपूर्ण मील के पत्थर से मेल खाने के लिए डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के आगामी स्मारक की प्रस्तावित ऊंचाई को ठीक 125 फुट होने के लिए आधिकारिक तौर पर अंतिम रूप दिया है।
• 2026 में उनके 125वें जयंती वर्ष के भव्य उत्सव को चिह्नित करने के लिए 125 फुट की विशिष्ट ऊंचाई चुनी गई है, जो उनकी ऐतिहासिक विरासत के लिए एक स्थायी स्थापत्य श्रद्धांजलि का निर्माण करती है।
• स्मारक को उच्च श्रेणी की सामग्री का उपयोग करके तैयार किया जाएगा और इसे पिछली स्थापनाओं को पीछे छोड़ने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो खुद को महान राजनेता की पूरी दुनिया में सबसे ऊंची प्रतिमा के रूप में स्थापित करेगा।
• यह संरचनात्मक प्रयास एक विशाल क्षेत्रीय विरासत पुनरुद्धार अभियान का मूल रूप बनाता है जो 1947 की अशांत विभाजन अवधि के दौरान उनके शानदार नेतृत्व को उजागर करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, यह सुनिश्चित करते हुए कि पश्चिम बंगाल भारत का एक अभिन्न अंग बना रहे।
Information Booster:
• इस 125 फुट की राजसी प्रतिमा की आधारशिला 5 जुलाई 2026 को रखी जानी है, जो उनकी जयंती की पूर्व संध्या पर है, जो साल भर चलने वाले राष्ट्रीय और क्षेत्रीय समारोहों की एक श्रृंखला की शुरुआत है।
• इस 2026 की घोषणा से पहले, डॉ. मुखर्जी की सबसे ऊंची मौजूदा प्रतिमा उत्तर प्रदेश के लखनऊ में प्रसिद्ध मूर्तिकारों राम सुतार और मंटू राम द्वारा डिजाइन की गई 65 फुट की कांस्य संरचना थी।
• यह परियोजना राज्य के खजाने द्वारा समर्पित 200 करोड़ रुपये के आवंटन के माध्यम से वित्त पोषित है, जो राज्य भर में संबद्ध सार्वजनिक पार्कों, डिजिटल अभिलेखागार और राष्ट्रवादी स्मारक स्थलों की स्थापना को भी कवर करती है।
Additional Knowledge:
• 100 फुट (विकल्प A): पूरे भारत में कई प्रतिष्ठित झंडों और क्षेत्रीय प्रतिमाओं के लिए उपयोग की जाने वाली एक सामान्य बेंचमार्क ऊंचाई, लेकिन यह इस परियोजना के लिए निर्दिष्ट प्रतीकात्मक 125वीं वर्षगांठ के आंकड़े से मेल नहीं खाती है।
• 150 फुट (विकल्प B): हालांकि विभिन्न भारतीय राज्यों में विभिन्न विशाल राष्ट्रीय परियोजनाओं के लिए विचार किया गया, इस ऊंचाई को नहीं चुना गया क्योंकि इसमें 125-वर्ष के मील के पत्थर के साथ सीधा कालानुक्रमिक संरेखण का अभाव था।
• 108 फुट (विकल्प D): एक ऊंचाई जिसका उपयोग अक्सर भारत में गहरे आध्यात्मिक और पारंपरिक महत्व वाली मूर्तियों के लिए किया जाता है, जैसे कि बेंगलुरु में स्टैच्यू ऑफ प्रॉस्पेरिटी, लेकिन इसे इस विशिष्ट राजनीतिक और ऐतिहासिक स्मारक के लिए नहीं चुना गया था।

Q2. डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती के सम्मान में पश्चिम बंगाल ने किस तारीख को राज्य अवकाश घोषित किया है?
(a) 23 जून
(b) 6 जुलाई
(c) 15 अगस्त
(d) 23 जनवरी
Ans.(b)
Sol. सही उत्तर (B) 6 जुलाई है

व्याख्या:

• एक असाधारण विधायी और सांस्कृतिक निर्णय में, पश्चिम बंगाल सरकार ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की स्मृति का सम्मान करने के लिए सभी प्रशासनिक विभागों में 6 जुलाई को पूर्ण राज्य सार्वजनिक अवकाश घोषित किया है।

• 6 जुलाई डॉ. मुखर्जी की जयंती का प्रतीक है, जिनका जन्म वर्ष 1901 में इसी तिथि को कलकत्ता में हुआ था, और यह नया अवकाश आधुनिक पश्चिम बंगाल के वास्तुकार के रूप में उनकी भूमिका की एक गहरी मान्यता के रूप में कार्य करता है।

• यह निर्णय जून 2026 में राज्य प्रशासन द्वारा औपचारिक रूप दिया गया था, जिसने आधिकारिक राज्य कैलेंडर में उनकी विरासत को संस्थागत बनाने की राष्ट्रवादी इतिहासकारों की लंबे समय से चली आ रही मांग को पूरा किया।

• इस घोषणा के साथ पूरे वर्ष चलने वाले एक विशाल राज्य-प्रायोजित स्मारक कार्यक्रम की घोषणा भी की गई, जो युवा नागरिकों को पाकिस्तान को बंगाल के अविभाजित आवंटन के खिलाफ उनके प्रतिरोध के बारे में शिक्षित करने के लिए है।

Information Booster:

• डॉ. मुखर्जी एक असाधारण रूप से बहुमुखी व्यक्तित्व थे, जिन्होंने एक प्रख्यात बैरिस्टर, एक शिक्षाविद्, एक प्रमुख हिंदुत्व कार्यकर्ता और जवाहरलाल नेहरू मंत्रिमंडल के तहत भारत के पहले उद्योग और आपूर्ति मंत्री के रूप में बड़ी विशिष्टता के साथ कार्य किया।

• बाद में उन्होंने विवादास्पद नेहरू-लियाकत समझौते के कड़े विरोध में 1950 में केंद्रीय मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया, उनका दृढ़ विश्वास था कि यह समझौता पूर्वी पाकिस्तान में अल्पसंख्यक हिंदुओं के मौलिक अधिकारों और जीवन की रक्षा करने में विफल रहा।

• केंद्र सरकार ने भी उनकी 125वीं जयंती के लिए बहु-वर्षीय राष्ट्रीय समारोह शुरू किए हैं, जिनमें विशेष स्मारक डाक टिकट, प्रचलन के सिक्के जारी करना और प्रमुख विश्वविद्यालयों में अकादमिक फेलोशिप शामिल हैं।

Additional Knowledge:

• 23 जून (विकल्प A): डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की गंभीर पुण्यतिथि, जिनका 1953 में श्रीनगर में हिरासत में रहते हुए अत्यधिक रहस्यमय परिस्थितियों में निधन हो गया था, और जिसे पूरे देश में आधिकारिक तौर पर बलिदान दिवस के रूप में मनाया जाता है।

• 15 अगस्त (विकल्प C): पूरे देश में भारत के स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है, जो 1947 में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के अंत का प्रतीक है, एक ऐतिहासिक दिन जिसके दौरान डॉ. मुखर्जी ने पहले स्वतंत्र मंत्रिमंडल में एक प्रमुख मंत्री के रूप में कार्यभार संभाला था।

• 23 जनवरी (विकल्प D): बंगाल के एक और महान सपूत नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती के सम्मान में राष्ट्रीय स्तर पर पराक्रम दिवस के रूप में मनाया जाता है, जो स्वतंत्रता संग्राम में उनके बेजोड़ साहस और सैन्य योगदान का जश्न मनाता है।

Q3. डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125 फुट की प्रतिमा किस शहर में स्थापित की जाएगी?

(a) सिलीगुड़ी

(b) कोलकाता

(c) दुर्गापुर

(d) आसनसोल

Ans.(b)

Sol. सही उत्तर (B) कोलकाता है

व्याख्या:

• जून 2026 में, पश्चिम बंगाल में नवगठित राज्य सरकार ने राजधानी कोलकाता में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125 फुट की विशाल प्रतिमा के निर्माण का एक ऐतिहासिक निर्णय घोषित किया।

• इस प्रमुख सांस्कृतिक परियोजना की घोषणा मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने राज्य के आधिकारिक पश्चिम बंग दिवस के भव्य समारोह के दौरान की, जो एक महत्वपूर्ण वैचारिक बदलाव का संकेत है और उस नेता का सम्मान है जिन्होंने 1947 में पश्चिम बंगाल के निर्माण का समर्थन किया था।

• डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जन्म कोलकाता में हुआ था, और उनकी पारिवारिक जड़ें इस शहर में गहराई से जुड़ी हुई हैं, जिससे यह भारतीय राष्ट्र के एकीकरण में उनके स्मारकीय योगदान को अमर बनाने के लिए ऐतिहासिक रूप से सबसे प्रासंगिक स्थान बन जाता है।
• यह भव्य स्मारक सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय अखंडता के प्रतीक के रूप में खड़ा करने का इरादा है, जिसकी आधारशिला उनकी जयंती से ठीक पहले 5 जुलाई को रखी जानी है।
Information Booster:
• इस 125 फुट की विशाल संरचना के साथ, राज्य सरकार ने डॉ. मुखर्जी की विरासत के लिए स्मारक योजनाओं को पूरी तरह से समर्पित एक व्यापक 200 करोड़ रुपये के पैकेज की घोषणा की है।
• इस ऐतिहासिक पहल में उनकी पैतृक संपत्ति का अधिग्रहण और सूक्ष्म जीर्णोद्धार भी शामिल है, जिसे युवा पीढ़ियों को प्रेरित करने के लिए एक अत्याधुनिक सार्वजनिक संग्रहालय और एक उन्नत शोध पुस्तकालय में परिवर्तित किया जाएगा।
• इससे पूर्व, डॉ. मुखर्जी को समर्पित सबसे ऊंची प्रतिमा उत्तर प्रदेश के लखनऊ में राष्ट्र प्रेरणा स्थल पर स्थित एक 65 फुट का कांस्य स्मारक था, जिसका अनावरण प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया था।
Additional Knowledge:
• सिलीगुड़ी (विकल्प A): उत्तर बंगाल में स्थित एक महत्वपूर्ण रणनीतिक और वाणिज्यिक शहर, जो पूर्वोत्तर भारत और पड़ोसी अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करता है, लेकिन यह इस मेगा प्रतिमा परियोजना के लिए चयनित स्थल नहीं है।
• दुर्गापुर (विकल्प C): पश्चिम बंगाल के औद्योगिक इस्पात केंद्र के रूप में जाना जाता है, जिसे 20वीं सदी के मध्य में डॉ. बी.सी. रॉय के तहत एक नियोजित शहर के रूप में विकसित किया गया था, लेकिन इस विशिष्ट सांस्कृतिक घोषणा से इसका कोई सीधा संबंध नहीं है।
• आसनसोल (विकल्प D): राज्य का दूसरा सबसे बड़ा शहरी समूह, जो मुख्य रूप से अपने व्यापक कोयला खनन और रेलवे नेटवर्क के लिए प्रसिद्ध है, और यह प्रस्तावित 125 फुट के स्मारक से जुड़ा नहीं है।

Q4. डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने किस विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में कार्य किया था?
(a) जादवपुर विश्वविद्यालय
(b) प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय
(c) विश्व भारती विश्वविद्यालय
(d) कलकत्ता विश्वविद्यालय
Ans.(d)
Sol. सही उत्तर (D) कलकत्ता विश्वविद्यालय है
व्याख्या:
• डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने प्रतिष्ठित कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में कार्य करके एक असाधारण शैक्षणिक मील का पत्थर हासिल किया, जिससे आधुनिक भारत के बेहतरीन शैक्षणिक विचारकों में से एक के रूप में उनकी प्रतिष्ठा मजबूत हुई।
• वर्ष 1934 में मात्र 33 वर्ष की उल्लेखनीय रूप से कम उम्र में इस प्रतिष्ठित पद पर नियुक्त होकर, उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय में कुलपति का पद संभालने वाले अब तक के सबसे कम उम्र के व्यक्ति बनकर इतिहास रच दिया।
• उनके शानदार और दूरदर्शी कार्यकाल के दौरान, जो 1934 से 1938 तक चला, उन्होंने क्रांतिकारी शैक्षिक सुधार पेश किए जिन्होंने अकादमिक ढांचे का आधुनिकीकरण किया और अनुसंधान सुविधाओं का काफी विस्तार किया।
• उनका नेतृत्व भारतीय संस्कृति और विरासत के प्रति गहरी प्रतिबद्धता द्वारा चिह्नित किया गया था, यह सुनिश्चित करते हुए कि विश्वविद्यालय औपनिवेशिक युग के दौरान विशिष्ट शैक्षणिक मानकों को बनाए रखते हुए राष्ट्रवादी विचारों का एक संपन्न केंद्र बन गया।

Information Booster:
• उनके सीधे मार्गदर्शन में, महान नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर को इतिहास में पहली बार बंगाली भाषा में प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय दीक्षांत भाषण देने के लिए आमंत्रित किया गया था, जिसने कठोर औपनिवेशिक अंग्रेजी परंपरा को तोड़ दिया।
• डॉ. मुखर्जी उच्चतम परीक्षाओं के लिए औपचारिक विषयों के रूप में भारतीय स्थानीय भाषाओं को पेश करने में सहायक थे, जिससे स्थानीय आबादी के लिए उच्च शिक्षा का लोकतंत्रीकरण हुआ।
• उनके पिता, महान सर आशुतोष मुखर्जी, जिन्हें 'बंगाल के बाघ' के नाम से जाना जाता है, ने भी कलकत्ता विश्वविद्यालय के शानदार कुलपति के रूप में कार्य किया था, जिससे भारतीय शिक्षा जगत में उनके परिवार का योगदान वास्तव में अद्वितीय हो गया।
Additional Knowledge:
• जादवपुर विश्वविद्यालय (विकल्प A): राष्ट्रीय शिक्षा परिषद से 1955 में पूर्ण विश्वविद्यालय के रूप में औपचारिक रूप से स्थापित, यह डॉ. मुखर्जी की शैक्षणिक प्रशासन अवधि के बहुत बाद पश्चिम बंगाल में इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी के लिए एक अग्रणी केंद्र बन गया।
• प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय (विकल्प B): ऐतिहासिक रूप से हिंदू कॉलेज (1817) और बाद में प्रेसीडेंसी कॉलेज के रूप में जाना जाता है, जहां वास्तव में डॉ. मुखर्जी ने एक शानदार छात्र के रूप में अध्ययन किया था, और 2010 में इसे विश्वविद्यालय में अपग्रेड किए जाने से पहले अंग्रेजी में प्रथम श्रेणी में स्नातक किया था।
• विश्व भारती विश्वविद्यालय (विकल्प C): 1921 में शांतिनिकेतन में रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित एक अद्वितीय केंद्रीय विश्वविद्यालय, जो ग्रामीण पुनर्निर्माण और सांस्कृतिक शिक्षा पर केंद्रित है, कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रशासनिक डोमेन से अलग है।

Q5. भारतीय जनसंघ बाद में वर्तमान की किस राजनीतिक पार्टी का आधार बना?
(a) जनता दल (यूनाइटेड)
(b) आम आदमी पार्टी
(c) भारतीय जनता पार्टी
(d) राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी
Ans.(c)
Sol. सही उत्तर (C) भारतीय जनता पार्टी है
व्याख्या:
• भारतीय जनसंघ (BJS), जिसकी स्थापना डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के सुदृढ़ नेतृत्व में हुई थी, समकालीन भारतीय जनता पार्टी (BJP) के प्रत्यक्ष वैचारिक और संगठनात्मक आधार के रूप में कार्य करता था।
• डॉ. मुखर्जी ने 21 अक्टूबर 1951 को दिल्ली में भारतीय जनसंघ की स्थापना की, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर केंद्रित एक मजबूत राजनीतिक विकल्प बनाने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) के साथ मिलकर काम किया।
• राष्ट्रीय आपातकाल की अशांत अवधि के बाद, जनसंघ 1977 में सत्तारूढ़ कांग्रेस शासन को हराने के लिए एकीकृत जनता पार्टी बनाने के लिए कई अन्य विपक्षी राजनीतिक समूहों के साथ विलय हो गया।
• हालाँकि, RSS के साथ दोहरी सदस्यता के संबंध में आंतरिक वैचारिक संघर्षों के कारण, पूर्व जनसंघ गुट जनता पार्टी से अलग हो गया और 6 अप्रैल 1980 को औपचारिक रूप से भारतीय जनता पार्टी (BJP) के रूप में खुद को पुनर्गठित किया।
Information Booster:
• डॉ. मुखर्जी द्वारा जनसंघ के लिए निर्धारित मूल आधारभूत सिद्धांत, जिनमें 'एक देश, एक विधान, एक निशान' (One Country, One Constitution, One Flag) शामिल हैं, भाजपा के राष्ट्रीय नीति घोषणापत्र का आधार बने हुए हैं।
• उन्होंने अनुच्छेद 370 के तहत जम्मू और कश्मीर को दिए गए विशेष दर्जे का कड़ा विरोध किया, यह जोर देते हुए कि इससे राष्ट्रीय एकीकरण को खतरा है, एक राजनीतिक रुख जिसका समापन अगस्त 2019 में भाजपा सरकार द्वारा इस अनुच्छेद को पूरी तरह से निरस्त करने में हुआ।
• कमल का प्रतीक, सांस्कृतिक विरासत पर जोर, और दीनदयाल उपाध्याय जैसे बाद के नेताओं द्वारा प्रणीत एकात्म मानववाद की अवधारणा सीधे जनसंघ के मूल ढांचे से जुड़ी है।

Additional Knowledge:

• जनता दल (यूनाइटेड) (विकल्प A): बिहार में अपने प्राथमिक आधार के साथ एक क्षेत्रीय राजनीतिक दल, जो मूल जनता दल गुट के विभिन्न विभाजनों और विलयों के माध्यम से बना है, जो दक्षिणपंथी जनसंघ वंशावली से पूरी तरह से अलग है।

• आम आदमी पार्टी (विकल्प B): अन्ना हजारे के नेतृत्व में भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन से 2012 में स्थापित एक आधुनिक राजनीतिक इकाई, जो लोकलुभावन शासन मॉडल पर ध्यान केंद्रित करती है और स्वतंत्रता के बाद के BJS से कोई ऐतिहासिक या वैचारिक संबंध नहीं रखती है।

• राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (विकल्प D): विदेशी मूल के नेतृत्व की बहस पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से अलग होने के बाद 1999 में शरद पवार, पी.ए. संगमा और तारिक अनवर द्वारा गठित, जो BJS-BJP वंशावली से पूरी तरह से अलग काम करती है।